

यपीयमभिसमोरोहन् TBr. 1, 5, 9, 3. प्रायणीयाव्यकर्माभिलक्ष्य देवयजनं प्रविष्टाः Comm.

— उप 1) *verwachsen, vernarben*: व्रणः सुCR. 2, 13, 15. 38, 14. उपव्र-
णव्रण 63, 13. — 2) *kommen —, übergehen in*: पूर्वस्मादवस्थान्तरमुपव्रण
तत्रभवती so v. a. *sie hat sich verändert* MĀLAV. 31, 13. — 3) *उपव्रत
haftend —, befindlich an (loc.)* GAUPAR. zu SĀMĀKHAJAK. 30 (°ठं zu lesen).
— *caus. verwachsen —, vernarben lassen* सुCR. 2, 106, 7.

— नि, partic. निव्रत *gewachsen*: महाकदम्बः सुयार्श्चनिव्रतः BUĀG. P. 5, 16, 23, 25. °मूल 3, 30, 7. *fest wurzelnd*: ममता 2, 4, 2 (विव्रण ed. Bomb.) 4, 27, 10. so v. a. *v्रत aus der Etymologie nicht erklärlich* SARVADARĀNAS. 172, 21. — *caus. verpflanzen, versetzen nach (loc.)*, Menschen RĀĀ-TAR. 1, 345.

— निम् s. नीरोह.

— प्र 1) *hervorwachsen, treiben, sprossen*: काण्डात्काण्डात्प्रोरोहन्ती VS. 13, 20. ते सुवर्गं लोकमा प्रोरोहन् TBr. 1, 1, 2, 5. मूलात् CAT. Br. 14, 6, 9, 33. पलाशानि 9, 2, 15. KĀND. UP. 5, 2, 3. त्रोक्यः शालयो मुद्रास्तिला माषास्तथा यवाः । यथाबीजं प्रोरोहन्ति M. 9, 39. क्वचित्सम्यं (so die ed. Bomb.) प्रोरोहन्ति MBh. 12, 2691. 13, 7144. न पर्वताये नलिनी प्रोरोहन्ति Spr. 1416. यदा प्रसृष्टा घोषध्वो न प्रोरोहन्ति ताः पुनः MĀK. P. 49, 73. उ-
प्यते यद्धि यद्बीजं तत्तदेव प्रोरोहन्ति Spr. 130. M. 9, 54. MBh. 12, 6896 (med.) KULL. zu M. 2, 112. मन्त्रबीजम् Spr. 2113. तुषेणापि परित्यक्ता न प्रोरोहन्ति तपडुलाः 3084. नक्षत्रं प्रोरोहन्ति MBh. 13, 7608. प्रव्रतशालि R. 5, 1. लतास्तमालस्य नवप्रव्रतः R. 5, 11, 17. नाभिप्रव्रताम्बुरुह RAGH. 13, 6. प्रव्रतबीजा मही VARĀH. BRH. S. 53, 98. प्रव्रतकेशश्मश्रुनखरोमोप-
चित lang *gewachsen* PAKĀT. 182, 10. स्फीतसस्यप्रव्रतानि (so die neuere Ausg.) वनानि *bewachsen mit* HARIV. 3729. प्रव्रत = बद्धमूल MED. dh. 8.

— 2) *wachsen so v. a. gedeihen, zunehmen, stärker werden*: नर्हि दुर्ब-
लदग्धानां कुले किञ्चित्प्रोरोहन्ति Spr. 2176. गोभिः पशुभिर्गृध्रैश्च कृष्या च सुसमृद्ध्या । कुलानि न प्रोरोहन्ति यानि हीनानि वृत्ततः ॥ MBh. 5, 1290. गुरुहृत्प्रोरोहन्तुसुकृतात्यय RĀĀ-TAR. 4, 123. प्रव्रत weit *verbreitet, ge-
wachsen so v. a. gross —, stark geworden*: भुवि व्यसनिताव्यातिः प्र-
व्रता ते लतेव वा KATHĀS. 11, 23. प्रव्रते संसर्गे मणिभुजगयोर्जन्मजनिते Spr. 288. °स्मर्यैवना SĀH. D. 100. °भाव BUĀG. P. 4, 13, 1. रूपः RĀĀ-TAR. 3, 284. °किरणो हि चन्द्रे नन्त्राणात्मत्पता भवति Schol. zu NĀSH. 22, 54. = वृद्ध H. an. 3, 189. = जठर d. i. जठर alt ebend. und MED. a. a. O. — 3) *hervorgehen, entstehen*: यस्यायमङ्गात्प्रव्रतः ÇĀK. 178. यथा प्रव्रते धर्मात्ते दक्षेत्कलं कृताशनः HARIV. 13331. स्त्रियः प्रव्रतगर्भाः so v. a. *schwanger* R. 4, 13, 26 (24 GORR.). स्वद्विन्दु ° 3, 76, 19. BUĀG. P. 4, 11, 30. — 4) *verwachsen, vernarben*: न प्रोरोहन्ति (v. l. für सरोरोहन्ति) वाक्कतम् Spr. 2647. नतप्रव्रतामिव बाणरेखाम् R. 5, 11, 24. — Vgl. प्ररुह, प्रव्रति, प्रोरोह fgg. — *caus. 1) pflanzen*: रोरोपित Spr. 2350. 3976. bildlich: अत्युदात्तगुणेषु कृतपुण्यैः प्रोरोपिता । शतशाखी भवत्येव यावन्मात्रापि सत्क्रिया ॥ *gepflanzt auf so v. a. ihnen erwiesen* 3423. — 2) *stecken — befestigen an, in*: यष्टिं प्रोरोपयेद्यत्ने VARĀH. BRH. S. 43, 29.

— अनुप्र *nachwachsen* ÇAT. Br. 7, 4, 2, 13.

— अमिप्र *sprossen* सुCR. 2, 360, 15.

— प्रति 1) *wieder sprossen, — treiben*: क्विन्नस्य यदि वृत्तस्य न मूलं प्रतिरोहन्ति MBh. 12, 6896. — 2) *nachahmen*: गतिस्मितप्रतपभाषणा-
VI. Theil.

दिषु प्रियाः प्रियस्य प्रतिव्रतमूर्तयः BUĀG. P. 10, 30, 3. — *caus. 1) je an seine Stelle pflanzen* VARĀH. BRH. S. 53, 6. — 2) *wieder pflanzen, wieder einsetzen*: कलमा उत्खातप्रतिरोपिताः RAGH. 4, 37. उत्खातान्प्रतिरोप-
यन् von Pflanzen und Fürsten Spr. 440. शत्रूनुद्धृत्य प्रतिरोपयन् RAGH. 17, 42.

— वि 1) *auswachsen, austreiben, sprossen*: वनस्पते शतवल्शो वि रोह R. V. 3, 8, 11. AV. 6, 30, 2. RV. 6, 24, 3. वि चारुहन्वी रुधः 10, 40, 9. एवा मयि प्रजा पशत्रो ऽन्नमन्नं वि रोहन्तु AV. 10, 6, 33. VS. 3, 43. 12, 100. 13, 21. यूपः TBr. 1, 4, 2, 1. व्यस्यामोषधयो रोहन्ति TS. 3, 4, 2, 3. von der *Erection* AV. 4, 4, 3. विव्रत *ausgewachsen, gewachsen, gekeimt* H. an. 3, 190. MED. dh. 9. KĀTJ. ÇA. 15, 9, 28. fg. ÇĀNH. ÇA. 13, 4, 1. ÇAT. Br. 7, 2, 4, 27. अश्वत्थं सुविव्रतमूलम् BUĀG. 15, 3. °तृणाङ्कुरामु (गृहेदेकलीषु) MĀKĀH. 6, 19. RAGH. 2, 26. उरजहारविव्रतं नोवारबलिम् ÇĀK. 96. सल-
लाद्विव्रतं कंजम् BUĀG. P. 3, 8, 17. सर्वबीजाविव्रतेव यथा सीता mit *aufge-
gangenem Samen aller Art bestanden* MBh. 7, 3945. — 2) *hervorgehen, entstehen*: विव्रत = ज्ञात H. an. MED. °बोध BUĀG. P. 3, 8, 22. °स्वेद-
कणिका 10, 43, 16. — 3) *besteigen*: सुविव्रतानां हस्त्यारोहैर्विशारदैः नागानाम् gut geritten von MBh. 7, 3105. — Vgl. विव्रतक, विरोह, वि-
रोहण. — *caus. 1) wachsen machen* RV. 8, 80, 5. *pflanzen*: विरोपयन्तां गुल्मिनः R. 7, 54, 11. — 2) *verwachsen —, vernarben machen*: विरोपि-
तव्रण DAÇAK. 86, 2, 3. — 3) *entsetzen, vertreiben aus*: पुत्रं राव्याञ्चापि व्यरोपयत् MBh. 3, 5049. — Vgl. विरोपण.

— सम् 1) *wachsen*: प्रेमदुमाः संरुहः प्रियाणाम् BHĀTT. 11, 5. कर्म्या-
प्रसंरुहत्पाङ्कुरेषु RAGH. 6, 47. संरुह = अङ्कुरित H. an. 3, 191. MED. dh. 10. — 2) *zusammenwachsen, verwachsen, vernarben*: तस्माद्धिद्यता अ-
ध्वानो ऽभूवन्न पन्थानः समरुहन् TS. 2, 5, 21, 2. संरुहर्षणाः R. ed. Bomb. 6, 50, 39. सुCR. 1, 67, 11. 83, 15. न सरोरोहन्ति वाक्कतम् (वाक्कतम् fälsch-
lich bei KULL. zu M. 7, 52) Spr. 2647. संरुहव्रण R. 3, 73, 6. 6, 71, 25. सं-
रुहशरवित्तत (fälschlich संरुहं ANĀ. 11, 1) MBh. 3, 12274. — 3) *hervor-
brechen, zum Vorschein kommen*: संरोहत्पुलका SĀH. D. 243, 11. मिथः
संरुहारागयोः 214. षष्टिवर्षगते काले यद्राषो ऽभूममानघ । स संरुहो ऽस-
कन् HARIV. 2127. — 4) *संरुह fest wurzelnd, — haftend*: तत्रो मनसि
संरुहं करिष्यामः so v. a. *das werden wir dem Gemüth fest einprägen*
MBh. 12, 12366. = प्रौढ H. an. MED. — *caus. 1) wachsen machen*: वंशं
कुरोर्विशदवामिनिर्हृतं सरोरोहयित्वा BUĀG. P. 1, 10, 2. *pflanzen, einsetzen*:
सरोरोपितान्पालयन् von Pflanzen und Fürsten Spr. 440, v. l. *säen*: सरो-
पिते ऽप्यात्मनि धर्मपत्नी त्यक्ता मया obgleich ich mich gesät hatte (sc.
in ihrem Mutterleibe) so v. a. *ein Kind mit ihr gezeugt hatte* ÇĀK. 151.

— 2) *zusammenwachsen —, vernarben lassen* सुCR. 1, 60, 5.

— उपसम् *verwachsen, vernarben*: व्रणाश्चिरादुपसरोरोहन्ति सुCR. 1, 18, 3, 4. — Vgl. उपसरोरोह.

2. रुह (= 1. रुह) f. *das in-die-Höhe-Gehen; Wuchs, Trieb, Spross*:
शतं वै अश्वं धामानि सरुहन्तुत वै रुहः RV. 10, 97, 2. रुहेः सरोरोह रो-
हन्तिः AV. 13, 1, 4. यास्ते रुहः प्ररुहेः यास्तं आरुहेः याभिरोपूणामि दि-
वम् 9, 26, 3, 26. ÇĀNH. ÇA. 5, 10, 32. Am Ende eines comp. *hervorschie-
send, wachsend*; s. अम्भो°, लिति°, कन्दोरोह्यम्, जल°, तनु°, पङ्क°,
पर्ण°, पर्व°, भू°, भूमि°, मही°.

रुह (von 1. रुह) 1) adj. (f. घ्रा) am Ende eines comp. *wachsend, ge-
wachsen, entstanden* H. 6. बीजकाण्डरुहाणि M. 1, 48. गिरिसानु° MBh.